تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَ اَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَ اعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾ السجدة

रोते नहीं[66] और तुम खेल में पड़े हो तो अल्लाह के लिये सज्दा और उस की बन्दगी करो[67]

ايَاتُهَا ٥٥ | ٥٤ سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ ٣٧ | رُكُوْعَاتُهَا ٣

सूरए क़मर मक्किय्या है, इस में पचपन आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَ انْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَ اِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَ

पास आई क़ियामत और[2] शक़ हो गया चांद[3] और अगर देखें[4] कोई निशानी तो मुंह फेरते[5] और

يَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَ كَذَّبُوْا وَ اتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ وَ كُلُّ اَمْرٍ

कहते हैं येह तो जादू है चला आता और उन्हों ने झुटलाया[6] और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[7] और हर काम क़रार

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ

पा चुका है[8] और बेशक उन के पास वोह ख़बरें आईं[9] जिन में काफ़ी रोक थी[10] इन्तिहा को पहुंची हुई

بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَیْءٍ

हि़क्मत फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले तो तुम उन से मुंह फेर लो[11] जिस दिन बुलाने वाला[12] एक सख़्त बे पहचानी बात की त़रफ़

66 : उस के वा'दा वई़द सुन कर । 67 : कि उस के सिवाए कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं । 1 : सूरए क़मर मक्किय्या है सिवाए आयत "سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ" के, इस में तीन 3 रुकूअ़, पचपन 55 आयतें और तीन सो बियालीस 342 कलिमे और एक हज़ार चार सो तेईस 1423 ह़र्फ़ हैं । 2 : उस के नज़्दीक होने की निशानी ज़ाहिर हुई कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़े से 3 : दो पारा हो कर । शक़्क़ुल क़मर जिस का इस आयत में बयान है नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ाते बाहिरा में से है, अहले मक्का ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से एक मो'जिज़े की दरख़्वास्त की थी तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने चांद शक़ कर के दिखाया, चांद के दो हि़स्से हो गए और एक हि़स्सा दूसरे से जुदा हो गया और फ़रमाया कि गवाह रहो, क़ुरैश ने कहा मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने जादू से हमारी नज़र बन्दी कर दी है, इस पर उन्हीं की जमाअ़त के लोगों ने कहा कि अगर येह नज़र बन्दी है तो बाहर कहीं भी किसी को चांद के दो हि़स्से नज़र न आए होंगे अब जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उन की जुस्त्जू रखो और मुसाफ़िरों से दरयाफ़्त करो अगर दूसरे मक़ामात से भी चांद शक़ होना देखा गया है तो बेशक मो'जिज़ा है, चुनान्चे सफ़र से आने वालों से दरयाफ़्त किया उन्हों ने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चांद के दो हि़स्से हो गए थे, मुश्रिकीन को इन्कार की गुन्जाइश न रही और वोह जाहिलाना त़ौर पर जादू ही जादू कहते रहे । सिह़ाह़ की अह़ादीसे कसीरा में इस मो'जिज़ए अ़ज़ीमा का बयान है और ख़बर इस दरजए शोहरत को पहुंच गई है कि इस का इन्कार करना अ़क़्ल व इन्साफ़ से दुश्मनी और बे दीनी है । 4 : अहले मक्का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिद्क़ व नुबुव्वत पर दलालत करने वाली 5 : उस की तस्दीक़ और नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام पर ईमान लाने से 6 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और उन मो'जिज़ात को जो अपनी आंखों से देखे 7 : उन अबात़ील (बात़िल ख़्वाहिशों) के जो शैत़ान ने उन के दिल नशीन की थीं कि अगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात की तस्दीक़ की तो उन की सरदारी तमाम आ़लम में मुसल्लम हो जाएगी और क़ुरैश की कुछ भी इ़ज़्ज़तो क़द्र बाक़ी न रहेगी । 8 : वोह अपने वक़्त पर होने ही वाला है कोई उस को रोकने वाला नहीं, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन ग़ालिब हो कर रहेगा । 9 : पिछली उम्मतों की जो अपने रसूलों की तक्ज़ीब करने के सबब हलाक किये गए । 10 : कुफ़्रो तक्ज़ीब से और इन्तिहा दरजे की नसीह़त । 11 : क्यूं कि वोह नसीह़त व इन्ज़ार से पन्द पज़ीर होने वाले नहीं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْقِتَالِ ثُمَّ نُسِخَ) 12 : या'नी ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام सख़रए बैतुल

نُّكُرٍ ۙ﴿٦﴾ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ

बुलाएगा[13] नीची आंखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया वोह टीड़ी (टिड्डी) हैं

مُّنْتَشِرٌ ۙ﴿٧﴾ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾

फैली हुई[14] बुलाने वाले की त़रफ़ लपक्ते हुए[15] काफ़िर कहेंगे येह दिन सख़्त है

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾

इन से[16] पहले नूह़ की क़ौम ने झुटलाया तो हमारे बन्दे[17] को झूटा बताया और बोले वोह मज्नून है और उसे झिड़का[18]

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ

तो उस ने अपने रब से दुआ की कि मैं मग़्लूब हूं तू मेरा बदला ले तो हम ने आस्मान के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के

مُّنْهَمِرٍ ﴿١١﴾ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾

बहते पानी से[19] और ज़मीन चश्मे कर के बहा दी[20] तो दोनों पानी[21] मिल गए उस मिक़्दार पर जो मुक़द्दर थी[22]

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ

और हम ने नूह़ को सुवार किया तख़्तों और कीलों वाली[23] पर कि हमारी निगाह के रू बरू बहती[24] उस के सिले में[25] जिस के साथ

كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

कुफ़्र किया गया था और हम ने उसे[26] निशानी छोड़ा तो है कोई ध्यान करने वाला[27] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब

وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ

और मेरी धम्कियां और बेशक हम ने क़ुरआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला[28] आ़द ने

मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस की चट्टान) पर खड़े हो कर **13 :** जिस की मिस्ल सख़्ती कभी न देखी होगी और वोह होले क़ियामत व हिसाब है। **14 :** हर त़रफ़ ख़ौफ़ से हैरान, नहीं जानते कहां जाएं। **15 :** या'नी ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ की त़रफ़। **16 :** या'नी क़ुरैश से **17 :** नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام **18 :** और धम्काया कि अगर तुम अपने पन्दो नसीह़त और वा'ज़ो दा'वत से बाज़ न आए तो हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे संगसार कर डालेंगे। **19 :** जो चालीस रोज़ तक न थमा **20 :** या'नी ज़मीन से इस क़दर पानी निकला कि तमाम ज़मीन मिस्ल चश्मों के हो गई। **21 :** आस्मान से बरसने वाले और ज़मीन से उबलने वाले **22 :** और लौह़े महफ़ूज़ में मक्तूब थी कि तूफ़ान इस ह़द तक पहुंचेगा। **23 :** एक कश्ती **24 :** हमारी हिफ़ाज़त में। **25 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के **26 :** या'नी इस वाक़िए़ को कि कुफ़्फ़ार ग़र्क़ कर के हलाक कर दिये गए और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को नजात दी गई और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक "تَرَكْنٰهَا" की ज़मीर कश्ती की त़रफ़ रुजूअ़ करती है। क़तादा से मरवी है कि अल्लाह तआ़ला ने उस कश्ती को सर ज़मीने जज़ीरा में और बा'ज़ के नज़्दीक "जूदी" पहाड़ पर मुद्दतों बाक़ी रखा यहां तक कि हमारी उम्मत के पहले लोगों ने उस को देखा। **27 :** जो पन्द पज़ीर हो और इ़ब्रत ह़ासिल करे। **28 :** इस आयत में क़ुरआने करीम की ता'लीम व तअ़ल्लुम और इस के साथ इश्तिग़ाल रखने और इस को ह़िफ़्ज़ करने की तरग़ीब है और येह भी मुस्तफ़ाद होता है कि क़ुरआन याद करने वाले की अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से मदद होती है और इस का ह़िफ़्ज़ सह्ल व आसान फ़रमा देने ही का समरा है कि बच्चे तक इस को याद कर लेते हैं, सिवाए इस के कोई मज़्हबी किताब ऐसी नहीं है जो याद की जाती हो और सहूलत से याद हो जाती हो।

www.dawateislami.net

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا

झुटलाया[29] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब और मेरे डर दिलाने के फ़रमान[30] बेशक हम ने उन पर एक सख़्त आंधी भेजी[31]

فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

ऐसे दिन में जिस की नुहूसत उन पर हमेशा के लिये रही[32] लोगों को यूं दे मारती थी कि गोया वोह उखड़ी हुई खजूरों के डन्ड (सूखे तने) हैं

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ

तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान और बेशक हम ने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है कोई

مُدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ ع كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ فَقَالُوا أَبَشَرًا مِنَّا وَاحِدًا ع ٢٢/٨

याद करने वाला समूद ने रसूलों को झुटलाया[33] तो बोले क्या हम अपने में के एक आदमी की

نَتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٢٤﴾ أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا

ताबेअ़ दारी करें[34] जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं[35] क्या हम सब में से इस पर[36] ज़िक्र उतारा गया[37]

بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾

बल्कि येह सख़्त झूटा इतरौना (शैख़ी बाज़) है[38] बहुत जल्द कल जान जाएंगे[39] कौन था बड़ा झूटा इतरौना (शैख़ी बाज़)

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ

हम नाक़ा भेजने वाले हैं उन की जांच को[40] तो ऐ सालेह़ तू राह देख[41] और सब्र कर[42] और उन्हें ख़बर दे दे कि

الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى

पानी उन में हिस्सों से है[43] हर हिस्से पर वोह हाज़िर हो जिस की बारी है[44] तो उन्हों ने अपने साथी को[45] पुकारा तो उस ने[46] ले कर

29 : अपने नबी ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को, इस पर वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब किये गए। **30 :** जो नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले आ चुके थे। **31 :** बहुत तेज़ चलने वाली, निहायत ठन्डी, सख़्त सन्नाटे वाली **32 :** ह़त्ता कि उन में कोई न बचा सब हलाक हो गए और वोह दिन महीने का पिछला बुध था। **33 :** अपने नबी ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत का इन्कार कर के और उन पर ईमान न ला कर **34 :** या'नी हम बहुत से हो कर एक आदमी के ताबेअ़ हो जाएं ? हम ऐसा न करेंगे क्यूं कि अगर ऐसा करें **35 :** येह उन्हों ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام का कलाम लौटाया, आप ने उन से फ़रमाया था कि अगर तुम ने मेरा इत्तिबाअ़ न किया तो तुम गुमराह व बे अ़क़्ल हो। **36 :** या'नी ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام पर **37 :** वह्य नाज़िल की गई और कोई हम में इस क़ाबिल ही न था **38 :** कि नुबुव्वत का दा'वा कर के बड़ा बनना चाहता है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है **39 :** जब अ़ज़ाब में मुब्तला किये जाएंगे। **40 :** येह इस पर फ़रमाया गया कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम ने आप से येह कहा था कि आप पथ्थर से एक नाक़ा (ऊंटनी) निकाल दीजिये, आप ने उन के ईमान की शर्त़ कर के येह बात मन्ज़ूर कर ली थी, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने नाक़ा भेजने का वा'दा फ़रमाया और ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام से इर्शाद किया **41 :** कि वोह क्या करते हैं और उन के साथ क्या किया जाता है **42 :** उन की ईज़ा पर **43 :** एक दिन उन का एक दिन नाक़ा का **44 :** जो दिन नाक़ा का है उस दिन नाक़ा ह़ाज़िर हो और जो दिन क़ौम का है उस दिन क़ौम पानी पर ह़ाज़िर हो। **45 :** या'नी क़ुदार बिन सालिफ़ को नाक़ा के क़त्ल करने के लिये **46 :** तेज़ तलवार।

www.dawateislami.net

فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً

उस की कूचें काट दीं[47] फिर कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान[48] बेशक हम ने उन पर एक चिंघाड़

وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ

भेजी[49] जभी वोह हो गए जैसे घेरा बनाने वाले की बची हुई घास सूखी रौंदी हुई[50] और बेशक हम ने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है

مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

कोई याद करने वाला लूत़ की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया बेशक हम ने उन पर[51] पथराव

حَاصِبًا اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ؕ كَذٰلِكَ

भेजा[52] सिवाए लूत़ के घर वालों के[53] हम ने उन्हें पिछले पहर[54] बचा लिया अपने पास की ने'मत फ़रमा कर हम यूंही

نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

सिला देते हैं उसे जो शुक्र करे[55] और बेशक उस ने[56] उन्हें हमारी गिरिफ़्त से[57] डराया तो उन्हों ने डर के फ़रमानों में शक किया[58]

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَاۤ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

उन्हों ने उसे उस के मेहमानों से फुस्लाना चाहा[59] तो हम ने उन की आंखें मेट दीं (बिल्कुल मिटा दीं)[60] फ़रमाया चखो मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान[61]

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَ

और बेशक सुब्ह़ तड़के (सुब्ह़ सवेरे) उन पर ठहरने वाला अ़ज़ाब आया[62] तो चखो मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान और

ع لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ ع وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ

बेशक हम ने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला और बेशक फ़िरऔ़न वालों के पास

47 : और उस को क़त्ल कर डाला **48 :** जो नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले मेरी त़रफ़ से आए थे और अपने मौक़अ़ पर वाक़ेअ़ हुए। **49 :** या'नी फ़िरिश्ते की होलनाक आवाज़ **50 :** या'नी जिस त़रह़ चरवाहे जंगल में अपनी बकरियों की ह़िफ़ाज़त के लिये घास कांटों का इह़ात़ा बना लेते हैं उस में से कुछ घास बची रह जाती है और वोह जानवरों के पाउं में रौंद कर रेज़ा रेज़ा हो जाती है, येह ह़ालत उन की हो गई। **51 :** इस तक्ज़ीब की सज़ा में **52 :** या'नी उन पर छोटे छोटे संगरेज़े बरसाए **53 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام और उन की दोनों साह़िब ज़ादियां इस अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहीं। **54 :** या'नी सुब्ह़ होने से पहले **55 :** **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का और शुक्र गुज़ार वोह है जो **अल्लाह** पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन की इत़ाअ़त करे। **56 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **57 :** हमारे अ़ज़ाब से **58 :** और उन की तस्दीक़ न की। **59 :** और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप हमारे और अपने मेहमानों के दरमियान दख़ील (मुख़िल) न हों, उन्हें हमारे ह़वाले कर दें और येह उन्हों ने निय्यते फ़ासिद और ख़बीस इरादे से कहा था और मेहमान फ़िरिश्ते थे, उन्हों ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप इन्हें छोड़ दीजिये, घर में आने दीजिये, जभी (जूंही) वोह घर में आए तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने एक दस्तक दी। **60 :** फ़ौरन वोह अन्धे हो गए और आंखें ऐसी नापैद हो गईं कि निशान भी बाक़ी न रहा, चेहरे सपाट (बराबर) हो गए, ह़ैरत ज़दा मारे मारे फिरते थे, दरवाज़ा हाथ न आता था, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें दरवाज़े से बाहर किया। **61 :** जो तुम्हें ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सुनाए थे। **62 :** जो अ़ज़ाबे आख़िरत तक बाक़ी रहेगा।

www.dawateislami.net

النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

रसूल आए[63] उन्हों ने हमारी सब निशानियां झुटलाईं[64] तो हम ने उन पर[65] गिरिफ़्त की जो एक इज़्ज़त वाले और अ़ज़ीम कुदरत वाले की शान थी

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

क्या[66] तुम्हारे काफ़िर उन से बेहतर हैं[67] या किताबों में तुम्हारी छुट्टी लिखी हुई है[68] या येह कहते हैं[69]

نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ

कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे[70] अब भगाई जाती है येह जमाअ़त[71] और पीठें फेर देंगे[72] बल्कि

السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ

इन का वा'दा क़ियामत पर है[73] और क़ियामत निहायत कड़ी और सख़्त कड़वी[74] बेशक मुजरिम

ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ وقف لازم

गुमराह और दीवाने हैं[75] जिस दिन आग में अपने मूंहों पर घसीटे जाएंगे और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़

سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ

की आंच बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई[76] और हमारा काम तो एक बात की बात है

كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ

जैसे पलक मारना[77] और बेशक हम ने तुम्हारी वज़्अ़ के[78] हलाक कर दिये तो है कोई ध्यान करने वाला[79] और उन्हों

شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ

ने जो कुछ किया सब किताबों में है[80] और हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है[81] बेशक

63 : ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام तो फ़िरऔ़नी उन पर ईमान न लाए। **64 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दी गई थीं। **65 :** अ़ज़ाब के साथ **66 :** ऐ अहले मक्का ! **67 :** या'नी उन क़ौमों से ज़ियादा क़वी व तुवाना हैं या कुफ़्रो इ़नाद में कुछ उन से कम हैं ? **68 :** कि तुम्हारे कुफ़्र की गिरिफ़्त न होगी और तुम अ़ज़ाबे इलाही से अम्न में रहोगे। **69 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **70 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **71 :** कुफ़्फ़ारे मक्का की। **72 :** और इस त़रह़ भागेंगे कि एक भी क़ाइम न रहेगा। **शाने नुज़ूल :** रोज़े बद्र जब अबू जहल ने कहा कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे येह आयते करीमा नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़िरह पहन कर येह आयत तिलावत फ़रमाई, फिर ऐसा ही हुवा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़त्ह़ हुई और कुफ़्फ़ार को हज़ीमत (शिकस्त) हुई। **73 :** या'नी इस अ़ज़ाब के बा'द इन्हें रोज़े क़ियामत के अ़ज़ाब का वा'दा है **74 :** दुन्या के अ़ज़ाब से उस का अ़ज़ाब बहुत ज़ियादा अशद। **75 :** न समझते हैं न राहयाब होते हैं। (تفسیر کبیر) **76 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत। **शाने नुज़ूल :** येह आयत क़दरियों के रद में नाज़िल हुई जो क़ुदरते इलाही के मुन्किर हैं और ह़वादिस को कवाकिब वग़ैरा की त़रफ़ मन्सूब करते हैं। **मसाइल :** अह़ादीस में उन्हें इस उम्मत का मजूस फ़रमाया गया और उन के पास बैठने और उन के साथ कलाम शुरूअ़ करने और वोह बीमार हो जाएं तो उन की इ़यादत करने और मर जाएं तो उन के जनाज़े में शरीक होने की मुमानअ़त फ़रमाई गई और उन्हें दज्जाल का साथी फ़रमाया गया, वोह बद तरीन ख़ल्क़ हैं। **77 :** जिस चीज़ के पैदा करने का इरादा हो वोह हुक्म के साथ ही हो जाती है। **78 :** कुफ़्फ़ार पहली उम्मतों के **79 :** जो इ़ब्रत ह़ासिल करें और पन्द पज़ीर हों। **80 :** या'नी बन्दों के तमाम अफ़्आ़ल ह़ाफ़िज़े आ'माल फ़िरिश्तों के नविश्तों में हैं **81 :** लौह़े मह़फ़ूज़ में।

www.dawateislami.net

الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿۵۴﴾ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿۵۵﴾ ع ٣

परहेज़ गार बाग़ों और नहर में हैं सच की मजलिस में अ़ज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर[82]

آیاتها ٧٨ | ٥٥ سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةٌ ٩٧ | رکوعاتها ٣

सूरए रह्मान मक्किय्या है, इस में अठत्तर आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

اَلرَّحْمٰنُ ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾

रह्मान ने अपने मह्बूब को कुरआन सिखाया[2] इन्सानिय्यत की जान मुहम्मद को पैदा किया مَاكَانَ وَمَايَكُوْن का बयान उन्हें सिखाया[3]

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿۵﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَ

सूरज और चांद हिसाब से हैं[4] और सब्ज़े और पेड़ सज्दा करते हैं[5] और

السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَ

आस्मान को **अल्लाह** ने बुलन्द किया[6] और तराज़ू रखी[7] कि तराज़ू में बे ए'तिदाली (ना इन्साफ़ी) न करो[8] और

اَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

इन्साफ़ के साथ तोल क़ाइम करो और वज़्न न घटाओ और ज़मीन रखी

لِلْاَنَامِ ﴿۱۰﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿۱۱﴾ وَالْحَبُّ

मख़्लूक़ के लिये[9] इस में मेवे और ग़िलाफ़ वाली खजूरें[10] और भुस

82 : या'नी उस की बारगाह के मुक़र्रब हैं। **1 :** सूरए रह्मान मक्किय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़ और छिहत्तर 76 या अठत्तर 78 आयतें, तीन सो इक्यावन 351 कलिमे, एक हज़ार छ[6] सो छत्तीस 1636 हर्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** जब आयत ''اُسْجُدُوا لِلرَّحْمٰنِ'' नाज़िल हुई कुफ़्फ़ार ने कहा रह्मान क्या है हम नहीं जानते, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने अर्रह्मान नाज़िल फ़रमाई कि रह्मान जिस का तुम इन्कार करते हो वोही है जिस ने कुरआन नाज़िल फ़रमाया और एक क़ौल येह है कि अहले मक्का ने जब कहा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को कोई बशर सिखाता है तो येह आयत नाज़िल हुई और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि रह्मान ने कुरआन अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सिखाया। (خازن) **3 :** इन्सान से इस आयत में सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं और बयान से ''مَاكَانَ وَمَا يَكُوْنُ'' का बयान, क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें देते थे। (خازن) **4 :** कि तक़्दीरे मुअ़य्यन के साथ अपने बुरूज व मनाज़िल में सैर करते हैं और इस में ख़ल्क़ के लिये मनाफ़ेअ़ हैं अवक़ात के हिसाब, सालों और महीनों का शुमार इन्हीं पर है। **5 :** हुक्मे इलाही के मुतीअ़ हैं। **6 :** और अपने मलाएका का मस्कन और अपने अहकाम का जाए सुदूर बनाया। **7 :** जिस से अश्या का वज़्न किया जाए और उन की मिक़्दारें मा'लूम हों ताकि लेन देन में अ़द्ल क़ाइम रखा जाए। **8 :** ताकि किसी की हक़ तलफ़ी न हो। **9 :** जो इस में रहती बसती है ताकि इस में आराम करें और फ़ाएदे उठाएं। **10 :** जिन में बहुत बरकत है।

www.dawateislami.net